रेखा शाह आरबी

इन्द्रधनुष के रंग हो

तुम्हें सोचना इंद्रधनुष है
मुख पर रंग बिखरे बिखरे
भाव से सज धज अंतरपुर
कोटि-कोटि रंग निखरे निखरे ,
भोर कि ये चंचल रश्मिया
मुख मंडल आभा आलोकित
सौंदर्य गढती अमलताश का
कुछ शोभांकर कल्पित ,

पारिजात की गंध भली
तुम्हारा आवाहन करती
कमल शतदल पाख खोले
मृदुल सौरभ संग सिहरती ,

ओस सजल से भीगी गात
नृत्य करती तुहीन कण पर
मुखमंडल पर लाज की लाली
फैल रही हृदय से अम्बर पर,
शरद ऋतु की बेला आई
मोह मिलन आस जागृत
कहां भला प्रतिबिम्बो से
हृदय चातक होता तृप्त,

हुलस झुलस भीत जारे
परिजात झिंगुला उतारे
नेह स्नेह अधरन मे डोले
क्यो करे उदधि सम खारे

किताबों के अपराधी

कुछ लोग किताबों के
बहुत बड़े अपराधी होते हैं
उन्हें सजावटी शोकेसो में
सजाकर छोड़ देते हैं
धूल फांकने के लिए
अकेलेपन की यातना
झेलने के लिए,

जबकि किताबें हमेशा
लालायित रहती हैं
किसी ऐसे हाथ में
जाने के लिए
जिसके मन में उसको लेकर
खूब उत्सुकता भरी हुई हो
या पढ़ने वाला पढ़ते-पढ़ते
सीने पर रखकर सो जाए ,

किताबों को रंज है कि
मुझे भी इंसान अच्छे लगते हैं
बड़े-बड़े शोकेस नहीं
वह उनसे निकल कर
भागना चाहती हैं
उन हाथों में जो रोज
उसके हर्फ को सहलाए
और उसमें लिखी
भावनाओं में डूब जाए,

बलिया (यूपी)

ISSN:2583-8849